४. बटोहिया

(पूरक पठन)

– रघुवीर नारायण

सुंदर सुभूमि भैया भारत के देसवा से
मोरे प्राण बसे हिम खोह रे बटोहिया
एक द्‌वार घेरे रामा हिम कोतवलवा से
तीन द्‌वार सिंधु घहरावे रे बटोहिया ।

जाहु-जाहु भैया रे बटोही हिंद देखी आउ
जहवाँ कुहुँकि कोइल बोले रे बटोहिया
पवन सुगंध-मंद अगर, चंदनवां से
कामिनी बिरह राग गावे रे बटोहिया ।

गंगा रे जमुनवा के झिलमिल पनियाँ से
सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया
ब्रह्‌मपुत्र-पंचनद घहरत निसि-दिन
सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया ।

ऊपर अनेक नदी उमड़ि-घुमड़ि नाचे
जुगन के जदुआ जगावे रे बटोहिया
आगरा, प्रयाग, काशी, दिल्ली, कलकतवा से
मोरे प्राण बसे सरजू तीर रे बटोहिया ।

जाउ-जाउ भैया रे बटोही हिंद देखि आउ
जहाँ ऋषि चारों बेद गावें रे बटोहिया
सीता के बिमल जस, राम जस, कृष्ण जस
मोरे बाप-दादा के कहानी रे बटोहिया ।

परिचय

जन्म : १८८४ (बिहार)
मृत्यु : १९५५
परिचय : रघुवीर नारायण जी प्रतिभाशाली, मृदुभाषी, हिंदी साहित्यकार तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे । जन-जागरण गीत की तरह गाया जाने वाला यह गीत पूरबी लोकधुन में लिखा गया है । आप भोजपुरी की इस कविता से अमर कवियों में शामिल हो गए ।
प्रमुख कृतियाँ : 'रघुवीर पत्र-पुष्प', 'रघुवीर रसरंग', 'रंभा' (अप्रकाशित खंडकाव्य) आदि ।

पद्‌य संबंधी

लोकभाषा में लिखे प्रस्तुत गीत में रघुवीर नारायण जी ने भारत देश का गौरवगान किया है । इस गीत में कवि ने भारत भूमि की प्रकृति, नदी, पहाड़, महापुरुष, कवि-लेखक, वेद-पुराण, तीर्थस्थलों आदि की चर्चा की है । आपका कहना है कि यह देश पूरी दुनिया का 'निचोड़' है । अतः सभी को इस देश की यात्रा अवश्य करनी चाहिए ।

ब्यास, बाल्मीकि, ऋषि गौतम, कपिलमुनि
सूतल अमर के जगावे रे बटोहिया
रामानुज-रामानंद न्यारी-प्यारी रूपकला
ब्रह्म सुख बन के भँवर रे बटोहिया ।

नानक, कबीर, गौर-संकर, श्रीराम-कृष्ण
अलख के बतिया बतावे रे बटोहिया
बिद्यापति, कालीदास, सूर, जयदेव कवि
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया ।

जाउ-जाउ भैया रे बटोही हिंद देखि आउ
जहाँ सुख झूले धान खेत रे बटोहिया
बुद्धदेव, पृथु, बिक्रमारजुन, सिवाजी के
फिरि-फिरि हिय सुध आवे रे बटोहिया ।

अपर प्रदेस, देस, सुभग-सुघर बेस
मोरे हिंद जग के निचोड़ रे बटोहिया
सुंदर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेही
जन रघुबीर सिर नावे रे बटोहिया ।

— ० —

शब्द संसार

देसवा पुं. सं.(दे.) = देश
कोइल स्त्री.सं.(दे.) = कोयल
बटोहिया पुं.सं.(दे.) = पथिक, राही
सोनभद्र स्त्री.सं.(सं.) = नदी विशेष का नाम
घहरना क्रि.(हिं.) = ऊँची आवाज में गर्जना करना
हिम खोह स्त्री.सं.(सं) = हिम की गुफा
सुभग वि.(सं) = मनोहर, सुखद
झमकना क्रि.(हिं.) = झनकार होना

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) सही विकल्प चुनकर लिखिए :

१. 'बटोहिया' शब्द से तात्पर्य है ------ [ ]
(यात्री) (नाविक) (कहार)

२. तीन द्वारों से गर्जना कर रहा है ------ [ ]
(हिमालय) (भारत) (समुद्र)

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

१. कविता में आए संत कवियों के नाम — [ ] [ ]

२. कविता में आई वनस्पतियों के नाम — [ ] [ ]

(३) कविता में इस अर्थ में प्रयुक्त शब्द लिखिए :

१. समुद्र = -----------
२. किनारा = -----------
३. सुंदर स्त्री = -----------
४. हृदय = -----------

(४) गीत से अपनी पसंद की किन्हीं चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

उपयोजित लेखन

अपने विद्‌यालय के प्राचार्य को ग्रंथालय में हिंदी पूरक पठन के लिए आवश्यक पुस्तकों की सूची देते हुए, उन्हें उपलब्ध कराने हेतु विद्‌यार्थी प्रतिनिधि के नाते निम्न प्रारूप में अनुरोध पत्र लिखिए :

दिनांक :
प्रति,
....
....
अभिवादन .....
विषय ....
महोदय,
विषय विवेचन
....
....
....
....
....
आपका/आपकी आज्ञाकारी,
....
(विद्‌यार्थी प्रतिनिधि)
कक्षा : ....

7HLQ1I